

भौमोऽत्रिः। पृथिवी । अनुष्टुप्।

बळित्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि।

प्र या भूमिं प्रवत्वति म्हा जिनोषि महिनि ॥ ५.०८४.०१

बट्- सत्यम्। इत्था- इत्थम्। पर्वतानाम्- मेघानाम्। खिद्रम्- भेदनम्। पृथिवि- अन्तरिक्षदेवते पृथुले। बिभर्षि- धारयसि। प्रवत्वति- प्रकर्षवति। महिनि- महति। भूमिम्- पृथिवीम्। म्हा- स्वमहिम्ना। प्र- प्रकर्षेण। जिनोषि- प्रीणयसि ॥१॥

स्तोमासस्त्वा विचारिणि प्रति शोभन्त्यक्तुभिः।

प्र या वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यस्यर्जुनि ॥ ५.०८४.०२

विचारिणि- चरणशीले। अक्तुभिः- गतिशीलैश्छन्दोभिः। स्तोमासः- मन्त्राः। त्वा- भवतीम्। स्तोभन्ति- स्तुवन्ति। अर्जुनि- शुभ्रे। वाजम्- अश्वम्। न- इव। हेषन्तम्- शब्दयन्तम्। पेरुम्- पूरकं मेघम्। प्र अस्यसि- प्रक्षिपसि ॥२॥

दृळ्हा चिद्या वनस्पतीन्क्षमया दर्धर्ष्योजसा।

यत्ते अभ्रस्य विद्युतौ दिवो वर्षन्ति वृष्टयः ॥ ५.०८४.०३

यत्- यदा। ते- तव। विद्युतः- विद्योतमानस्य। अभ्रस्य- मेघस्य। दिवः- नभसः। वृष्टयः। वर्षन्ति। तदा। ओजसा- बलेन। दृळ्हा- दृढान्। वनस्पतीन्। क्षमया- भूम्या सह। दर्धर्षि- धारयसि ॥३॥